بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 11 अक्तूबर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

ख़न्दक़ तथा बनू क़ुरैज़ा नामक युद्धों के परिपेक्ष में सीरत नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 11.10.24

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल अहज़ाब की लड़ाई का वर्णन चल रहा है। यह बयान हुआ था कि काफ़िरों ने रात को आँधी एवं तूफ़ान के कारण मैदान को ख़ाली कर दिया। जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट से सेनाओं को वापस भगा दिया तो आप स. ने फ़रमाया- اَلْآنَ نَغْزُوْهُمْ وَلَا يَغْزُوْنَنَا अर्थात- भविष्य में हम क़ुरैश के मुक़ाबले के लिए निकलेंगे परन्तु उनको हमारे मुक़ाबले के लिए निकले का साहस नहीं होगा तथा इसके बाद ऐसा ही हुआ। ख़न्दक़ का घेराव पन्द्रह दिन अथवा एक कथन के अनुसार बीस दिन रात अथवा लगभग एक महीना रहा। खाई वाली लड़ाई में 9 लोग शहीद हुए थे तथा दो सहाबी पहले शहीद हो गए थे, जो अबू सुफ़यान की सेना की जानकारी लेने गए थे। इस तरह कुल 11 सहाबी शहीद हुए थे जबकि मुशरिकों के तीन लोग मारे गए थे।

अहज़ाब नामक युद्ध का चमत्कारिक रूप से परिणाम निकला। इसके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि लगभग बीस दिन के घेराव के बाद काफ़िरों की सेना मदीना से असफल वापस चली गई तथा बनू क़ुरैज़ा, जो उनकी सहायता के लिए निकले थे, वे भी अपने क़िले में वापस आ गए। इस लड़ाई में औस नामक क़बीले के सरदार आज़म सअद बिन मआज़ रज़ी. को ऐसा गम्भीर घाव लगा कि वे अन्ततः इसके कारण स्वस्थ न हो सके। इस युद्ध में क़ुरैश को कुछ ऐसा धक्का

लगा कि इसके बाद फिर उनको कभी मुसलमानों के विरुद्ध इस तरह जत्था बनाकर निकलने या मदीना पर हमला करने का साहस न हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी शब्दशः पूरी हुई।

काफ़िरों की सेना के चले जाने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सहाबा रज़ी. को वापसी का आदेश दिया तथा मुसलमान युद्ध स्थल से उठ कर मदीने में दाख़िल हो गए। ख़न्दक़ अथवा अहज़ाब का युद्ध जो इस प्रकार अचानक तथा आशा के विरुद्ध समाप्त हुआ, एक अत्यंत भयानक लड़ाई थी। इससे बढ़कर कोई हंगामी दुविधा उस समय तक मुसलमानों पर नहीं आई थी तथा न ही उसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में कोई इतनी बड़ी कठिनाई उनके जीवन में आई। यह एक भयावह भूचाल था जिसने इस्लाम के भवन को जड़ से हिला दिया तथा कमज़ोर ईमान वालों ने समझ लिया कि बस, अब विनाश है। इस दुविधा के कष्ट को बनू क़ुरैज़ा के विश्वासघात ने दो गुना कर दिया। इस पूरे षड्यन्त्र की जड़ में बनू नज़ीर के वे विश्वासघाती यहूदी थे जिन पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उपकार की भावना से उनको मदीना से अमन एवं शांति के साथ निकल जाने की आज्ञा दे दी थी। यह उन्हीं यहूदी सरदारों की भड़काऊ योजना थी कि जिससे अरब के मरुस्थल पर समस्त विख्यात क़बीले इस्लाम की दुश्मनी के नशे में मदहोश होकर मुसलमानों को मल्यामेट करने के लिए मदीने के चारों ओर एकत्र हो गए थे। यह बात पूर्णतः विश्वस्त है कि यदि उस समय उन पिशाच दुष्टों को नगर में दाख़िल हो जाने का अवसर मिल जाता तो एक अकेला मुसलमान भी जीवित न बचता तथा किसी पवित्र मुस्लिम महिला की लाज उन लोगों के अपराधिक हमलों से सुरक्षित न रहती, किन्तु यह केवल अल्लाह तआला की कृपा तथा उसकी क़ुदरत का गुप्त हाथ था कि उस टिड्डी दल को निराश हो कर वापस होना पड़ा तथा मुसलमान संतोष एवं विश्वास के साथ अमन एंव शांति का सांस लेते हुए अपने घरों में वापस आ गए।

बनू क़ुरैज़ा की आशंका निरन्तर बनी हुई थी तथा उनके फ़ितने को कुचलना अति आवश्यक था क्यूँकि उनका अस्तित्व मदीने में मुसलमानों के लिए कदाचित एक आसतीन के सांप से कम न था इसकी रोक थाम के लिए बनू क़ुरैज़ा के विरुद्ध भी काररवाई हुई जिसे ग़ज़वा बनू क़ुरैज़ा कहते हैं, जो ज़ीक़अदा पांच हिजरी, अर्थात मार्च अप्रैल 627 हिजरी में हुआ। खाई वाली लड़ाई से वापस आने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबियों ने हथ्यिार उतार दिए। अल्लाह की क़सम, हमने हथियार नहीं उतारे और अभी तक हम अहज़ाब के पीछा करने के काम से वापस आ रहे हैं, यहाँ तक हम हमरुल असद नामक स्थान पर पहुंच गए और अल्लाह तआला ने उनको पराजित कर दिया तथा संकेत से आप स. को बनू क़ुरैज़ा की ओर अपनी दिशा बदलने को कहा। हज़रत आयशा रज़ी. के पूछने पर कि क्या यह हज़रत वह्यी क़लबी रज़ी. थे? तो आप स. ने फ़रमाया कि उनके समरूप ये हज़रत जिबरईल अलै. थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी समय घोषणा करवाई कि बनू क़ुरैज़ा की ओर निकल पड़ें तथा असर की नमाज़ वहीं पढ़ें। अतएव ऐलान सुनते ही सहाबी तेज़ी से निकल पड़े।

कुछ सहाबियों ने असर की नमाज़ का समय समाप्त होने की शंका के कारण रास्ते में ही नमाज़ पढ़ ली तथा कुछ सहाबियों ने बनू क़ुरैज़ा में जाकर असर की नमाज़ पढ़ी, जबकि सूर्य अस्त हो चुका था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों दलों को कुछ नहीं कहा। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. को बुलाया और उनको सेना का उक़ाब नामक काला धवज दिया। सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ी. को एक जमाअत के साथ आगे आगे चलने वाले एक दल के रूप में रवाना फ़रमा दिया तथा फिर स्वयं भी उनके पीछे रवाना हो गए।

मुसलमानों के बनू क़ुरैज़ा पर घेराव का विवरण और अधिक इस प्रकार बयान हुआ है कि जब घेराव की अवधि लम्बी हो गई तथा यहूदियों को शांति वार्ता करने की कोई सुविधा न मिली तो उनके सरदार कअब बिन असद ने उनके सामने तीन प्रस्ताव पेश किए। पहला- हम मुहम्मद स. पर ईमान लाकर मुसलमान हो जाएँ, क्यूँकि आप स. की सच्चाई स्पष्ट हो चुकी है। इस तरह अनिवार्य होगा कि युद्धविराम हो जाएगा। दूसरा- हम अपने बच्चों तथा महिलाओं को मार डालें तथा बाद के परिणामों से निश्चिंत होकर तलवारें लेकर मैदान में निकलें तथा फिर जो हो, सो हो। तीसरा- आज सब्त की रात है और मुहम्मद स. तथा उनके सहाबी आज अपने आपको हमारी ओर से अमन में समझते होंगे। अतः आज की रात हम क़िले से निकल कर आप स. तथा आप स. के साथियों पर हमला कर दें तथा सम्भावना है कि हम विजय पा लेंगे। किन्तु बनू क़ुरैज़ा ने तीनों प्रस्ताव मानने से इंकार कर दिया तथा समस्या वहीं की वहीं बनी रही। कअब के बाद एक अन्य यहूदी उमरू बिन सअदा ने कहा कि तुमने मुहम्मद स. से समझौता किया तथा उसको तोड़ दिया, तो यहूदियत पर तो सुदृढ़ता पूर्वक जमे रहो और उनको ज़िज़्या द दो, परन्तु इस यहूदी का सुझाव भी रद्द कर दिया गया। जिस पर वह उसी रात क़िले से बाहर निकल गया और आप स. की अनुमति से उसे जाने दिया गया। आप स. ने उससे फ़रमाया कि तू ऐसा आदमी है जिसे अल्लाह ने उसकी वफ़ादारी के कारण मुक्ति दे दी। आप स. की ये बातें सुनकर तीन अन्य लोग उसी रात क़िले से बाहर आकर इस्लाम ले आए और अपनी जान, अपने परिवार तथा अपने कर्म बचा लिए।

हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. की घटना भी बयान हुई है। इस विषय में लिखा है कि बनू क़ुरैज़ा की इच्छा पर बातचीत के लिए आप स. ने अबू लुबाबा बिन मुंज़िर अन्सारी रज़ी. को उनके क़िले के अन्दर भिजवा दिया। बनू क़ुरैज़ा ने चाल चली और ज्यूँ ही हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. क़िले के भीतर दाख़िल हुए तो महिलाएँ एवं बच्चे उनके सामने रोने लगे। हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. उनके लिए विनम्र हो गए। उन्होंने कहा कि मुहम्मद स. अपना निर्णय क़बूल करवाने के अतिरिक्त किसी बात पर तय्यार नहीं हैं। आपका क्या विचार है कि हम उनके निर्णय को क़बूल कर लें? तो हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. ने उत्तर दिया कि हाँ, तथा अपने हाथ से अपने गले की ओर काटे जाने का संकेत किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारी हत्या करने का आदेश देंगे, जबकि यह पूर्णतः ग़लत था तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कदाचित ऐसा काई इरादा प्रकट नहीं किया था। हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. कहते हैं कि अल्लाह की क़सम, मुझे लगा कि मैंने अल्लाह और उसके रसूल से विश्वासघात किया है। मैं शर्मिंदा

हुआ कि यह क्या संकेत कर दिया। मैंने **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** पढ़ा और वापस आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास नहीं गया बल्कि मस्जिद में जाकर अपने आपको को दंड देने के लिए एक खम्बे से बाँध दिया और कहा कि मैं यहाँ से नहीं हटूंगा, यहाँ तक कि मर जाऊँ अथवा अल्लाह मेरे इस काम पर मेरी तौबा स्वीकार कर ले। इब्ने हिश्शाम कहते हैं कि वे छः रातों तक बंधे रहे। अंततः अल्लाह तआला ने हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. की तौबा क़बूल की और इस विषय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आयत नाज़िल हुई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- इस प्रकार यह स्पष्ट हो कि हज़रत अबू लुबाबा रज़ी. की यह घटना सहा सित्तह (हदीस की छः विख्यात पुस्तकें) में नहीं मिलती परन्तु इतिहास में इसका वर्णन मिलता है। आगे इसका सविस्तार वर्णन जारी रहने का इरशाद फ़रमा कर हुज़ूरे अनवर ने दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया- पाकिस्तान के अहमदयों को स्वयं भी अपने लिए दुआ करनी चाहिए, आजकल उन पर ज़मीन तंग से तंग करने की कोशिश की जा रही है। अल्लाह की रज़ा को पाने की पहले से बढ़ कर कोशिश करनी चाहिए इन्हें, क्यूँकि परिस्थितियाँ ख़राब से ख़राब होती जा रही हैं, जैसा कि मैंने कहा, अल्लाह तआला अपना फ़ज़्ल और रहम फ़रमाए। इसी तरह दुनिया में जो बसने वाले अहमदी हैं पाकिस्तानी, वे भी विशेष रूप से अपने पाकिस्तानी भाईयों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको कठिनाईयों से मुक्ति प्रदान करे, आमीन।

इसी तरह बंगला देश के अहमदियों के लिए भी दुआ करें तथा वे स्वयं भी अपने लिए दुआ करें। अल्लाह तआला हर एक उपद्रव से उन्हें भी बचाए। उनको भी पकड़ा जा रहा है, उनका ईमान अल्लाह मज़बूत रखे। सूडान के अहमदी भी वहाँ युद्ध की स्थिति के कारण बुरी अवस्था में हैं, उनके लिए भी दुआ करें।

हर जगह कलमा गो, कलमा गो के हाथों कठिनाईयों में घिरा हुआ है तथा यही कारण है कि ग़ैर, इस्लाम विरोधी लोग बे-धड़क मुसलमानों को हानि पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला इसराईल की सरकार तथा अमरीकी सरकार तथा बड़ी शक्तियों के हाथ रोक सकता है, उसक हाथ में पूरी शक्ति है परन्तु इसके लिए मुसलमानों को भी अपने अमल अल्लाह तआला की रज़ा के अनुसार ढालने होंगे तथा भाई भाई बनने का नमूना बनना होगा, आपस के मतभेद को समाप्त करना होगा, जो हमें कहीं नज़र नहीं आ रहा। तब ही अल्लाह तआला की सहायता का वादा भी पूरा होगा, उसके बिना तो नहीं हो सकता। मुसलमानों को एकता के साथ मोमिन बन कर रहना होगा। अल्लाह तआला हमें भी और समस्त मुसलमानों को भी इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131